International Journal of Jyotish Research: 2025; 10(2): 161-169

International Journal of Jyotish Research
(वेदचक्षु)

ISSN: 2456-4427
Impact Factor: RJIF: 5.64
Jyotish 2025; 10(2): 161-169
© 2025 Jyotish
www.jyotishajournal.com
Received: 15-08-2025
Accepted: 20-09-2025

अनिल कौशल
ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

डॉ. अंजना जोशी
शोध निर्देशक, ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
अनिल कौशल
ज्योतिष विभाग, मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़, राजस्थान, भारत

ज्योतिष की मदद से जानिए-जातक को क्या पैतृक संपत्ति मिलेगी :एक ज्योतिषीय विश्लेषण

अनिल कौशल, डॉ. अंजना जोशी

DOI: https://www.doi.org/10.22271/24564427.2025.v10.i2c.285

प्रस्तावना

ज्योतिष एक प्राचीन एवं व्यवस्थित शास्त्र है, जो ग्रहों नक्षत्रों के प्रभावों और मानव जीवन-की घटनाओं के मध्य संबंध की व्याख्या करता है। इसकी व्यापक परिधि में संपत्ति एवं उत्तराधिकार)Inheritance) से संबंधित अध्ययन अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखता है, क्योंकि ये विषय परिवार, वंश परंपरा, कर्म और भौतिक समृद्धि से गहराई से जुड़े हुए हैं।

ज्योतिषीय दृष्टि से यह जानना कि किसी व्यक्ति को पैतृक संपत्ति प्राप्त होगी या नहीं यह सदैव से विद्वानों के लिए एक आकर्षक एवं व्यावहारिक विषय रहा है। केवल आर्थिक पक्ष से नहीं बरन भाग्य, वंश और कर्मफल की दार्शनिक व्याख्या से भी जुड़ा हुआ है।

इस शोध का उद्देश्य पैतृक संपत्ति प्राप्ति से जुड़े ज्योतिषीय कारकों की पहचान और विश्लेषण करना है। विशेष रूप से द्वितीय, चतुर्थ, अष्टम और नवम भाव, उनके स्वामी ग्रहों तथा कारक ग्रहों — मंगल एवं शनि — की परस्पर स्थिति और संबंधों पर विशेष ध्यान दिया गया है, क्योंकि पारंपरिक रूप से ये भाव और ग्रह धन, परिवार की संपत्ति, उत्तराधिकार और पूर्वजों से संबंध के प्रतिनिधि माने जाते हैं।

इस अध्ययन में बृहत् पाराशर होरा शास्त्र, फलदीपिका, जातक पारिजात और सारावली जैसे प्राचीन ग्रंथों में उल्लिखित योगों एवं संयोजनों का भी संदर्भ लिया गया है। जब इन योगों की उचित व्याख्या व्यक्ति की जन्मकुंडली के संदर्भ में की जाती है, तब वे जातक की पैतृक संपत्ति प्राप्ति या वंचना के कर्मिक संकेत को स्पष्ट करते हैं।

यह शोध प्राचीन ग्रंथों के ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए एक सुसंगठित ज्योतिषीय विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, जिससे यह निर्धारित किया जा सके कि व्यक्ति को पैतृक संपत्ति मिलने की संभावना कितनी है। इस प्रकार यह अध्ययन न केवल पारंपरिक ज्योतिष की भविष्यवाणीसंबंधी नींव को पुष्ट करता है-, बल्कि इसे एक वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक शोध-विषय के रूप में भी स्थापित करता है।

यह विषय शोध के लिए चयन करने का प्रमुख उद्देश्य यह है कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में भूमि संपत्ति की प्राप्ति बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है। यह आर्थिक स्थिरता, सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तिगत सफलता का प्रतीक है। किंतु संपत्ति प्राप्त करने के तरीके स्वयं के परिश्रम —, पारिवारिक सहायता या वंशानुगत उत्तराधिकार से प्रत्येक व्यक्ति में भिन्न होते हैं। —

ज्योतिष एक दैवीय विज्ञान होने के कारण व्यक्ति के प्रयत्न, क्षमता और भाग्य के गूढ़ संकेत प्रदान करता है। प्राचीन ग्रंथों में संपत्ति, उत्तराधिकार और धन से संबंधित अनेक योगों का उल्लेख मिलता है, परंतु इन योगों को संपत्ति प्राप्ति के स्रोत स्वयं का) (प्रयास अथवा पारिवारिक सहायता से जोड़कर अब तक बहुत कम व्यवस्थित शोध हुआ है।

इस शोध के माध्यम से मैं यह वैज्ञानिक रूप से विश्लेषण करना चाहता हूँ कि ग्रहों और भावों की स्थिति यह कैसे दर्शाती है कि जातक को संपत्ति अपने प्रयासों से मिलेगी या परिवारसंबंधियों की सहायता से। यह अध्ययन न केवल ज्योतिषीय ज्ञान को / समृद्ध करेगा, बरन ज्योतिषियों और आम व्यक्तियों दोनों के लिए व्यवहारिक मार्गदर्शन भी प्रदान करेगा, जिससे वे अधिक सटीक और सार्थक भविष्यवाणियाँ कर सकें।

संक्षेप में यह विषय मेरी अकादमिक रुचि और ज्योतिष को शोधपरक रूप देने की भावना — दोनों के अनुरूप है।

भूमि, भवन और चतुर्थ भाव

वैदिक ज्योतिष में चतुर्थ भाव(सुख भाव) व्यक्ति की अचल संपत्ति, भवन, भूमि, वाहन, मातृ सुख और घरेलू जीवन की स्थिति को दर्शाता है।

1. यदि चतुर्थ भाव या उसका स्वामी शुभ एवं बलवान हो, तो जातक को भूमि, भवन और वाहन प्राप्ति के योग बनते हैं।
2. चंद्रमा सुविधा का द्योतक है।-भावनात्मक सुख और गृह — चतुर्थ भाव का प्राकृतिक कारक ग्रह —

3. मंगल भूमि, भवन और संपत्ति का प्रमुख कारक ग्रह है।
4. शुक्र घर की शोभा, विलासिता और सुंदरता का कारक है।
5. यदि चतुर्थ भाव या उसका स्वामी पापग्रहों से पीड़ित हो, तो संपत्ति प्राप्ति में बाधा, मुकदमेबाजी, या पारिवारिक विवाद संभव है।
6. D-9 (नवांश(और D-4 (चतुर्थांश(कुंडलियों में चतुर्थ भाव और उसके स्वामी की स्थिति का विश्लेषण संपत्ति से संबंधित सटीक निष्कर्षों के लिए आवश्यक है।
7. D-4 चार्ट में चतुर्थ भाव जातक की वास्तविक भूमि एवं भवन संपत्ति का स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करता है।

इस शोधपत्र में मैं अपने अनुभवों को- केवल पैतृक)ancestral) संपत्ति से संबंधित योगों तक सीमित रखूँगा।

पैतृक संपत्ति योग)Ancestral Property Yogas)

भारतीय ज्योतिष के अनेक प्राचीन ग्रंथों में पैतृक धनसंपत्ति प्राप्ति से संबंधित - । ये योग जातक के पारिवारिक भाग्यविशिष्ट योगों का उल्लेख मिलता है, पूर्वजों से प्राप्त आशीर्वाद तथा कर्मिक फल के संकेतक माने गए हैं। नीचे ऐसे ही कुछ प्रमुख योग प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

1. शनि और पैतृक संपत्ति)Saturn and Ancestral Property)

श्लोक:

"शनिना दृष्टे चतुर्थस्थे पित्र्यं धनमवाप्नुयात्।
गृहं वा मातृसंयुक्तं दीर्घकालं भजेत् नरः॥"

भावार्थ

यदि जन्मकुंडली में शनि चतुर्थ भाव को दृष्टि कर रहा हो, तो जातक को पैतृक संपत्ति प्राप्त होती है, अथवा वह अपने पैतृक घर में दीर्घकाल तक निवास करता है।
शनि एक स्थायित्व प्रदान करने वाला ग्रह है, अतः उसकी दृष्टि अचल संपत्ति एवं पारिवारिक विरासत के संरक्षण का सूचक मानी जाती है।

2. माता से संपत्ति अथवा भूमि लाभ का योग

(*Phaladeepika, अध्याय 7, श्लोक 2*)

श्लोक

"सुखेशे बलयुक्ते वा चतुर्थे गृहराशिगे।
मातृधनं लभेत् व्यक्तिर्भूमि वाहनसम्पदा॥"

भावार्थ

यदि चतुर्थेश बलवान होकर भूमि अथवा जल तत्व की राशि में स्थित हो, तो जातक को माता से धन, भूमि, भवन या वाहन का लाभ होता है।
यह योग मातृक पक्ष से संपत्ति प्राप्ति का एक प्रमुख सूचक माना गया है।

3. पिता के माध्यम से उत्तराधिकार योग

(*Phaladeepika, अध्याय 9, श्लोक 12 – नवम भाव के संदर्भ में(*

श्लोक

"पित्रोर्लाभो भवेद्यस्य नवमे शुभदृग्गते।
दीर्घायुषो धनाढ्यश्च भूमिवान् स नरो भवेत्॥"

भावार्थ

यदि नवम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि या संयोग हो, तो जातक को पिता के माध्यम से संपत्ति और भूमि प्राप्त होती है।
ऐसा जातक दीर्घायु, धनवान और भूमिसंपन्न होता है।

4. अष्टम भाव से प्राप्त पैतृक संपत्ति का योग

(*जातक पारिजात वैद्यनाथ दीक्षित –, अध्याय 12*)

श्लोक

"अष्टमे शुभदृग्योगे पितृभूपालधनं लभेत्।
तत्र स्थिरेऽथवा लग्ने भूम्यादिलाभमाप्नुयात्॥"

भावार्थ

यदि अष्टम भाव पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और लग्न अथवा अष्टमेश स्थिर राशि में स्थित हो, तो जातक को भूमि, धन और संपत्ति पैतृक या पूर्वजों से प्राप्त होती है।
अष्टम भाव उत्तराधिकार और वंशगत संपत्ति का मुख्य भाव माना गया है।

5. संबंधियों अथवा परिवार से संपत्ति का योग

(जातक पारिजात, अध्याय 11 – द्वितीय भाव योग(

श्लोक

"द्वितीये शुभयोगे च कुलधनं विनिर्गतम्।
मातृपक्षेण वा लभ्यं धनेशे स्थिरराशिगे॥"

भावार्थ

यदि द्वितीय भाव या उसके स्वामी पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो और वह स्थिर राशि में स्थित हो, तो जातक को परिवार अथवा मातृक पक्ष से धनसंपत्ति प्राप्त होती है।-
द्वितीय भाव अतः यह योग खानदानी धन एवं विरासत के — का भाव है "कुलधन" लिए अत्यंत शुभ माना जाता है।

6. जातक सारदीप (यवन मतानुसार फल)

श्लोक

"स्वस्वामिशुभयुग्दृष्टं चतुर्थं मित्रसौख्यदम्।
ब्रघ्नो भौमेनसंदृष्टः कुरुतेऽत्रसुहृत्क्षयम्॥"

भावार्थ

यदि चतुर्थेश अथवा शुभ ग्रह चतुर्थ भाव को दृष्टि करें तो जातक को घरपरिवार का - सुख प्राप्त होता है।
परंतु यदि सूर्य और मंगल परस्पर दृष्टि करें, तो यह योग चतुर्थ भाव के सुखों का नाश करता है।

श्लोक

"चन्द्राद् विलग्नाच्च रविश्चतुर्थे कुर्यात् पितृद्रव्यसुखास्पदं च।
शुक्रस्तु दाराश्रयसौख्यवृत्त सग्वस्त्रसौभाग्य गृहाणिदद्यात्॥"

भावार्थ

यदि सूर्य लग्न या चंद्रमा से चतुर्थ भाव में स्थित हो, तो जातक को पिता की संपत्ति एवं धन का लाभ होता है।
यदि शुक्र चतुर्थ भाव में हो, तो जातक को पत्नी के माध्यम से घर, धन, आभूषण एवं विलासिता की वस्तुएँ प्राप्त होती हैं।

श्लोक

"गुरुस्तु यत्नाहित बन्धुसांख्यं चन्द्रः परक्षेत्र कृताधिवासम्।
सुदुःखितं ज्ञोऽन्य गृहाटनाढ्यं कुजोऽर्कजो दासगृहालयं च॥"

भावार्थ

यदि गुरु चतुर्थ भाव से संबंधित हो तो जातक को परिश्रम से भूमि एवं संपत्ति प्राप्त होती है।

यदि चंद्रमा चतुर्थ भाव में हो तो जातक परदेश में निवास करता है।

यदि मंगल या सूर्य चतुर्थ भाव में हों, तो दासगृह या परावलंबन की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

श्लोक

"पापश्चतुर्थे परवेश्मसंस्थं तदीक्षितेऽन्यैः शुभदैरदृष्टे।
करोत्यसंस्थानपरोपतापं प्रायः स्वबन्धूद्भवजं दुःखम्॥"

भावार्थ

यदि चतुर्थ भाव में पापग्रह स्थित हो और उस पर किसी शुभ ग्रह की दृष्टि न हो, तो जातक को भवन या संपत्ति से संबंधित कष्ट, मुकदमेबाजी या परिवारजन द्वारा उत्पन्न दुःख का सामना करना पड़ता है।

इन सभी योगों से स्पष्ट होता है कि चतुर्थ, द्वितीय, अष्टम और नवम भाव एवं उनके स्वामियों की स्थिति व्यक्ति की पैतृक संपत्ति प्राप्ति की संभावनाओं को स्पष्ट रूप से इंगित करती है।

शुभ ग्रहों की दृष्टि या संयोजन पैतृक धनसंपत्ति के योग बनाते हैं-, जबकि पापग्रहों का प्रभाव विवाद, हानि या विलंब के संकेत देता है।

प्रकरण अध्ययन)Case Study – 1)

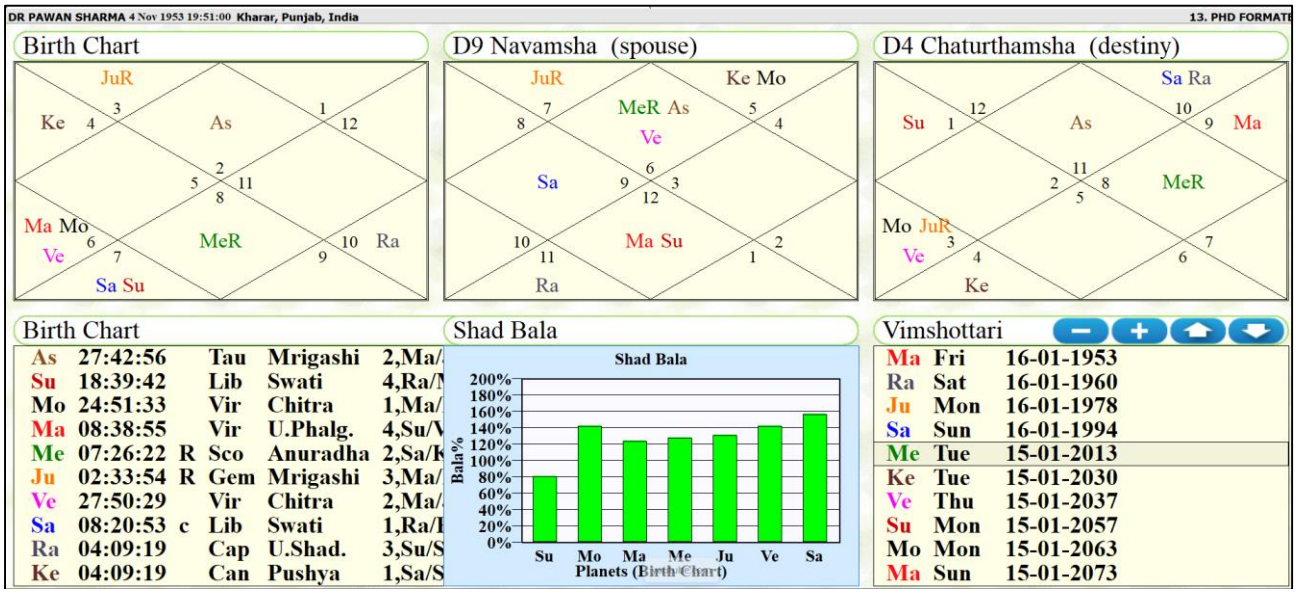

डॉपवन शर्मा .

जन्म विवरण:

- जन्म तिथि :04 नवम्बर 1953
- जन्म समय :19:51
- जन्म स्थानखरड़ :, पंजाब

भूमि एवं संपत्ति योग विश्लेषण)Land and Property Yoga Analysis)

D-1 लग्न कुंडली विश्लेषण

- लग्न: वृषभ — (स्थिर राशि)जो अचल संपत्ति और स्थायित्व का प्रतीक है।
- चतुर्थेश सूर्य, छठे भाव में शनि के साथ स्थित है।

विश्लेषण:

1. नियम 1: चतुर्थेश सूर्य केंद्र भाव में नहीं है और शनि के साथ युति में है यह — योग संपत्ति एवं सुखों के लिए अनुकूल नहीं।
2. नियम 5: भूमि व संपत्ति का कारक मंगल, चंद्रमा व शुक्र के साथ द्वितीय भाव में स्थित है यह योग विशेषतः तब शुभ होता है जब चंद्रमा सम्मिलित हो —, जिससे भूमि या परिवार से धन की प्राप्ति होती है।
3. नियम 6: शनि और सूर्य (चतुर्थेशपैतृक संपत्ति का योग देता — का संयोग (है, परंतु कठिन परिश्रम व संघर्ष के साथ।
4. नियम 9 (फलदीपिका:(चतुर्थेश स्थिर राशि में हो तथा चंद्रमा चतुर्थ में हो — मा द्वितीय भाव में स्थित हैयहाँ लग्न स्थिर है पर चंद्र, अतः यह आंशिक योग प्रदान करता है।
5. नियम 4: द्वितीय भाव में चंद्र, शुक्र और मंगल की युति पारिवारिक संपत्ति — और समृद्धि का उत्तम संकेतक।

D-9 नवांश कुंडली

- लग्नेश शुक्र बलवान स्थिति में है यह संपूर्ण कुंडली को स्थायित्व एवं — सौभाग्य प्रदान करता है।

D-4 चतुर्थांश कुंडली

- चतुर्थेश मंगल, 11वें भाव में स्थित भूमि व संपत्ति से लाभ और — विलासिता का योग देता है।
- शनि दशम भाव (केंद्र) में स्थित होकर चतुर्थ भाव पर दृष्टि डालता है यह — पैतृक संपत्ति तो देता है, किंतु विलंब और संघर्ष के बाद।

तालिका 1: षड्बल)Shadbala) विश्लेषण

ग्रह	षड्बल	टिप्पणी
सूर्य	0.81	चतुर्थेश निर्बल ✗ संपत्ति हेतु बाधक –
चंद्र	1.24	बलवान ✓
मंगल	1.28	भूमि के लिए शुभ ✓
बुध	1.10	मध्यम बल ◐
गुरु	1.30	शुभ फलदायक ✓
शुक्र	1.41	बलवान लग्नेश ✓
शनि	1.56	अत्यंत बलवान; कर्मजन्य, विलंब से संपत्ति प्रदान करता है ✓

तालिका 2: नियमानुसार योग) सारांश-Rule Match Summary)

नियम संख्या	नियम विवरण	कुंडली में स्थिति	परिणाम
#1	चतुर्थेश बलवान होकर केंद्र में	नहीं सूर्य छठे) में(	✗
#5	मंगल चंद्रमा या चतुर्थ भाव को प्रभावित करे	मंगलचंद्र युति-	✓
#6	शनि का चतुर्थ से संबंध	शनियुति (चतुर्थेश) सूर्य-	✓
#9	स्थिर लग्न व चंद्रचतुर्थेश चतुर्थ में/	आंशिक रूप से	◐
#14	द्वितीय भाव में शुभ ग्रह	चंद्र, शुक्र, मंगल	✓
#15	स्थिर लग्न व बलवान चतुर्थेश	लग्न स्थिर ✓, पर सूर्य निर्बल ✗	✗
#8	चतुर्थएकादश संबंध-	नहीं पाया गया	✗

निष्कर्ष)Conclusion):

डॉपवन शर्मा की कुंडली में . मध्यम से प्रबल भूमि एवं संपत्ति योग विद्यमान हैं, जिनके प्रमुख संकेत इस प्रकार हैं —

- पारिवारिक संपत्ति :(द्वितीय भाव योग) चंद्र, शुक्र और मंगल की युति पारिवारिक धन और संपन्नता का प्रमुख योग देती है।
- पैतृक संपत्ति :(सूर्य योग-शनि) चतुर्थेश सूर्य शनि के साथ होने से वंशानुगत संपत्ति प्राप्त होती है, परंतु परिश्रम और देरी के बाद।
- भूमि लाभ)D-4 में मंगल 11वें में:(स्वप्रयास से भूमि और भवनों से लाभ।
- स्थिर लग्न :(वृषभ) यह स्थायी संपत्ति एवं गृह सुख के स्थायित्व का सूचक है।

प्रकरण अध्ययन)Case Study – 2)

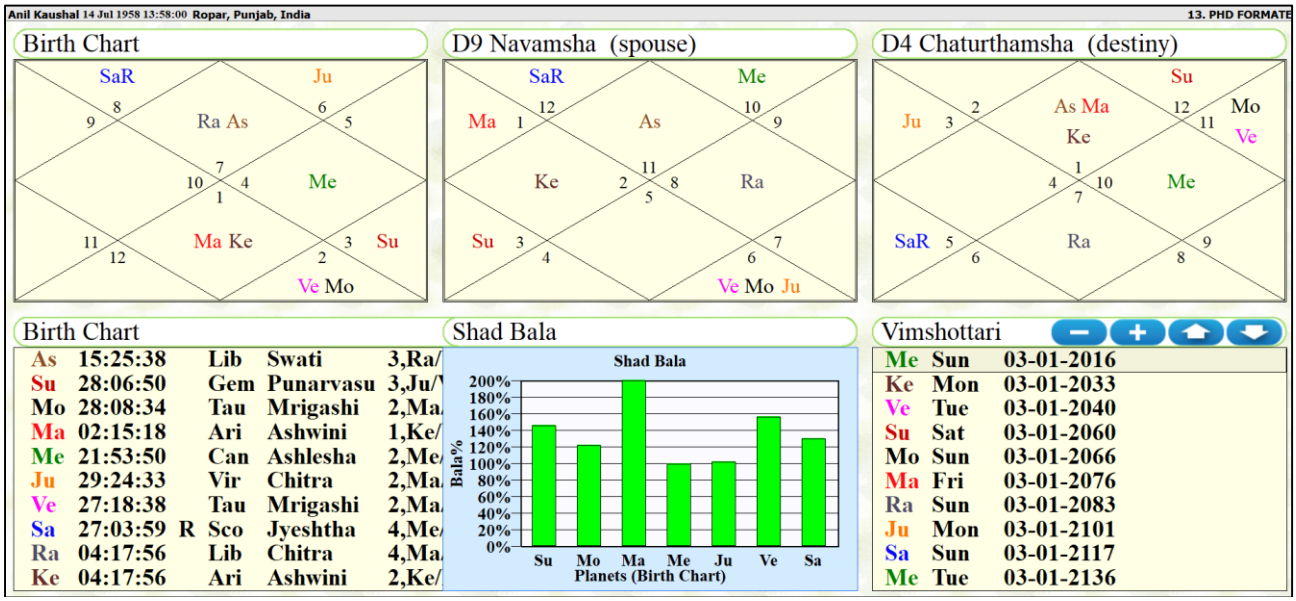

भूमि एवं संपत्ति योग विश्लेषण

नाम: श्री अनिल कौशल

जन्म विवरण: 14 जुलाई 1958, समय 13:58 (दोपहर(, स्थान रूपनगर (रोपड़), पंजाब

लग्न: तुला)Libra)

D-1 लग्न कुंडली विश्लेषण

- लग्न: तुला सामाजिक रूप से सक्रिय) चर राशि —, पर संपत्ति में स्थायित्व हेतु बल आवश्यक।(
- चतुर्थेश: शनि)Saturn) वृश्चिक राशि में 2nd भाव में स्थित यह स्थिति — परिवार या संबंधों के माध्यम से संपत्ति प्राप्ति दर्शाती है, किंतु कुछ विलंब और परिश्रम के साथ।
- मंगल: भूमि व भवन का प्रमुख कारक, चतुर्थांश का प्राकृतिक कारक, 11वें भाव में — स्थित (सिंह राशि) संपत्ति से लाभ का स्पष्ट योग।
- सूर्य: नवम भाव में मिथुन राशि पितृसंपत्ति या भाग्य के माध्यम से संपत्ति — का योग।
- चंद्र: आठवें भाव में वृषभ — में (उच्च राशि) स्थायी धन और पारिवारिक संपत्ति का बल देता है।
- शुक्र: लग्नेश होकर 8वें भाव में स्थित भाग्य और पुराने निवेशों से संपत्ति — या लाभ संभव।
- गुरु: 11वें भाव में सिंह राशि में संपत्ति से लाभ का सुदृढ़ योग। —

नियमआधारित विश्लेषण-

नियम 1: यदि चतुर्थेश बलवान हो और केन्द्र में स्थित हो ⟶ स्थायी संपत्ति

- चतुर्थेश शनि केन्द्र में न होकर द्वितीय भाव में है, पर उच्च बल रखता है ⟶ मध्यम फल।

नियम 5: मंगल ⟶ यदि लाभ भाव में है (कारक भूमि) भूमि से लाभ।

- पूर्णतः सत्य — मंगल 11वें भाव में संपत्ति लाभ का योग बनाता है।

नियम 6: यदि चतुर्थेश शनि या सूर्य के संपर्क में हो ⟶ पितृ या कर्मजन्य संपत्ति संभावित।

- शनि स्वयं चतुर्थेश है ⟶ कर्म के फल से भूमि लाभ।

नियम 9 (फलदीपिका:(स्थिर लग्न या स्थिर चतुर्थेश हो ⟶ स्थायी संपत्ति।

- तुला चर राशि है, पर चतुर्थेश शनि स्थिर राशि में ⟶ स्थायित्व दर्शित।

नियम 14: द्वितीय भाव में शुभ ग्रह ⟶ पारिवारिक संपत्ति या सहयोग से धन।

- शनि यहाँ स्थित ⟶ संपत्ति पर नियंत्रण धीरेधीरे प्राप्त।-

नियम 15: यदि चतुर्थेश बलवान हो और 11वें भाव से संयोग रखे ⟶ संपत्ति से लाभ।

- मंगल गुरु-11वें भाव में ⟶ उत्कृष्ट भूमि लाभ योग।

D-9 नवांश (आंतरिक बल/धार्मिक)

- लग्न: कुंभ
- मंगल: 5वें भाव में ⟶ भूमि संवेदन क्षमता का विकास।
- शुक्र: 10वें भाव में ⟶ आवासीय सुख में वृद्धि।
- गुरु: 12वें भाव में ⟶ विदेश या दूरस्थ संपत्ति संकेत।

➞ नवांश में लग्नेश शनि शुभ स्थिति में है ⟶ सम्पत्ति विषयों में धैर्य से लाभ निश्चित।

D-4 चतुर्थांश (संपत्ति विभाग/भूमि)

- चतुर्थेश शनि यहाँ 5वें भाव में ⟶ संपत्ति से लाभ का पक्का योग।
- मंगल सूर्य के साथ योग ⟶ स्वयं के प्रयास से भूमि निर्माण या संपत्ति खरीद।
- गुरु 11वें भाव में ⟶ संपत्ति से आय वृद्धि।
- शुक्र 4वें भाव में ⟶ सुंदर घर और वाहन सुख का प्रबल संकेत।

तालिका 3: शड्बल विश्लेषण (ग्रहबल)

ग्रह	बल	टिप्पणी
सूर्य	मध्यम	सामान्य
चंद्र	उच्च	धनस्थायित्व-
मंगल	अच्छा	भूमि कारक मजबूत
बुध	मध्यम	बौद्धिक निवेशों से लाभ
गुरु	अच्छा	आय से संपत्ति लाभ
शुक्र	मध्यम से अधिक	भोगविलास और घर सुख-
शनि	सर्वाधिक बलवान	मुख्य भूमिका संपत्ति संबंधी मामलों में

तालिका 4: नियममिलान सारांश-

नियम संख्या	विवरण	परिणाम
रु1	चतुर्थेश बलवान केन्द्र में	आंशिक ✓
रु5	मंगल भूमि कारक लाभ भाव में	✓
रु6	शनि चतुर्थेश ⟶ कर्म से भूमि	✓
रु9	स्थिर चतुर्थेश	✓
रु14	द्वितीय भाव में शुभ ग्रह	आंशिक ✓
रु15	चतुर्थेश लाभ भाव –संबंध	✓
रु8	चतुर्थ-11वें भाव का संबंध	✓

निष्कर्ष

श्री अनिल कौशल जी की कुंडली में भूमि और संपत्ति के मजबूत योग मौजूद हैं। मुख्य बिंदु इस प्रकार हैं

- 11वें भाव में मंगल⟶ गुरु का योग- भूमि से लाभ और वृद्धि।
- चतुर्थेश शनि बलवान ⟶ कठिन परिश्रम के बाद स्थायी संपत्ति।
- उच्च चंद्र ⟶ पारिवारिक स्थायित्व और रियल एस्टेट से धन।
- D-4 में मंगल⟶ सूर्य योग- स्वयं के प्रयास से घर निर्माण या प्रॉपर्टी खरीद।
- स्थिर चतुर्थेश और बलवान शनि ⟶ दीर्घकालिक भूमि स्वामित्व।

प्रकरण अध्ययन)Case Study – 3)

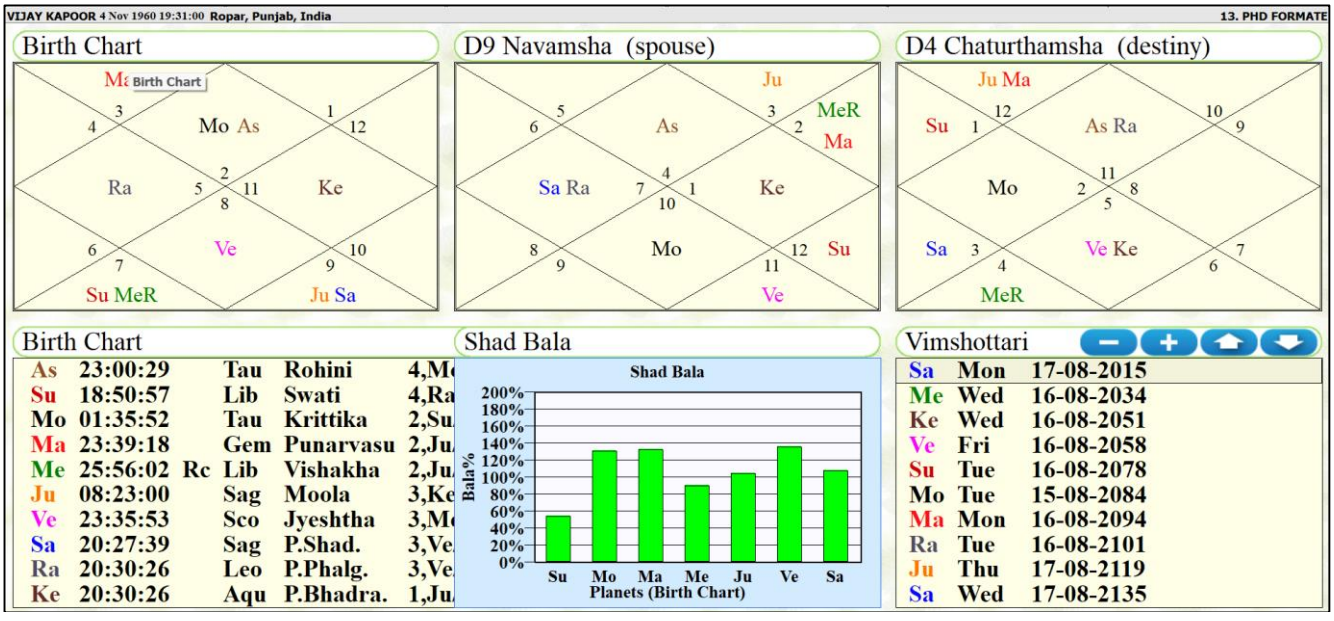

भूमि एवं संपत्ति योग विजय कपूर —

जन्म विवरण: 4 नवम्बर 1960, सायं 19:31

जन्म स्थान: रूपनगर (रोपड़), पंजाब

लग्न: वृषभ)Taurus Lagna)

D-1 (लग्न कुंडली विश्लेषण(

1. चतुर्थ भाव)Leo): इसका स्वामी सूर्य तुला राशि)6वें भावमें स्थित है (, जहाँ वह नीच का हो जाता है और वक्री बुध के साथ स्थित है।
   चतुर्थेश निर्बल) अतः संपत्ति योग कमज़ोर —Rule #1 और #2 असफल।(
2. भूमि कारक मंगल)Mars): सप्तम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित है (स्वक्षेत्र), जो दशम भाव पर दृष्टि डालता है परन्तु चतुर्थ भाव पर नहीं।
   मंगल मज़बूत है पर चतुर्थ से सीधा संबंध नहीं)Rule #5 आंशिक रूप से संतुष्ट।(
3. शनि)Saturn): अष्टम भाव में धनु राशि में स्थित है, और चतुर्थ भाव पर दृष्टि नहीं डालता।
   Rule #6 (पितृ संपत्तिअसफल। (
4. द्वितीय भाव स्वामी बुध)Mercury): छठे भाव में वक्री होकर नीच के सूर्य के साथ स्थित है।
   धन व संपत्ति में कमजोर संबंध।
5. लग्नेश शुक्र)Venus): सप्तम भाव — में स्थित है (वृश्चिक)न तो विशेष शुभ, न अशुभ। संपत्ति योग पर मिश्रित प्रभाव।

D-9 (नवांश कुंडली विश्लेषण(

- चतुर्थ भाव में चंद्रमा स्थित है गृह सुख एवं संपत्ति के प्रति झुकाव का योग —)Rule #3, #9 आंशिक रूप से पूर्ण।(
- लग्न कन्या)Virgo) है, और इसका स्वामी बुध द्वितीय भाव में स्थित है —) परिवार या परिश्रम से संपत्ति प्राप्ति का संकेतRule #14 आंशिक रूप से पूर्ण।(
- शनि और राहु चंद्र से चतुर्थ में हैं संपत्ति प्राप्ति में बाधाएँ या विलंब। —

D-4 (चतुर्थांश कुंडली (संपत्ति का विशिष्ट विश्लेषण —

- लग्न: मेष)Aries) — लग्नेश मंगल दशम भाव में उच्च राशि में (मकर) स्थित है।
  भूमि, भवन, और प्रॉपर्टी से कर्मफल लाभ का योग ।(राजयोग)
- चतुर्थेश चंद्रमा द्वितीय भाव में स्थित है) परिवार से संपत्ति लाभ —Rule #14 पूर्ण।(
- शनि पंचम भाव में प्रत्यक्ष संपत्ति संबंध नहीं। —
- शुक्रकेतु युति– षष्ठ भाव में विलंब या भौतिक सुखों में बाधा। —

तालिका5 : नियमवार सारणी)Rule Matching)

नियम सं.	नियम विवरण	फल	टिप्पणी
1–2	चतुर्थेश बलवान शुभ /दृष्टि	✓	चतुर्थेश नीच
3	चंद्र शुक्र चतुर्थ में /	¤	चंद्र D-9 में चतुर्थ में
5	मंगल बलवान चंद्र से संबंध /	¤	मंगल स्वक्षेत्र में
6	शनि चतुर्थ पर दृष्टि	û	नहीं है
8	4th–11th लिंक	û	नहीं मिला
9	स्थिर लग्न या चंद्र चतुर्थ में	¤	आंशिक)D-9 में(
14	2nd–4th संबंध	✓	D-4 में सशक्त
15	स्थिर लग्न एवं बलवान चतुर्थेश	¤	लग्न स्थिर, पर सूर्य निर्बल

निष्कर्ष

- D-1 में: चतुर्थेश सूर्य नीच का और निर्बल होने से संपत्ति योग कमज़ोर है।
- D-9 में: चंद्र चतुर्थ में — गृह सुख एवं कुछ अचल संपत्ति का संकेत।
- D-4 में: मंगल उच्च का होकर दशम भाव में परिश्रम एवं कर्म के द्वारा — संपत्ति अर्जन का प्रबल योग।
- द्वितीय भाव में चंद्र)D-4): परिवार या अपनी मेहनत से भूमि प्राप्ति।

कुल मिलाकर:

विजय कपूर जी की कुंडली में जन्मजात या पितृ संपत्ति के योग कमजोर हैं, परंतु स्व-प्रयास, कर्म, और समय के साथ अर्जन से संपत्ति निर्माण के प्रबल योग हैं।
केतु की उपस्थिति और निर्बल सूर्य के कारण संपत्ति संबंधी कार्यों में विलंब, विवाद या कठिनाई संभव है, किंतु D-4 कुंडली में मंगल की उच्च स्थिति अंततः स्थायी संपत्ति और भवन सुख का संकेत देती है।

प्रकरण अध्ययन)Case Study – 4)

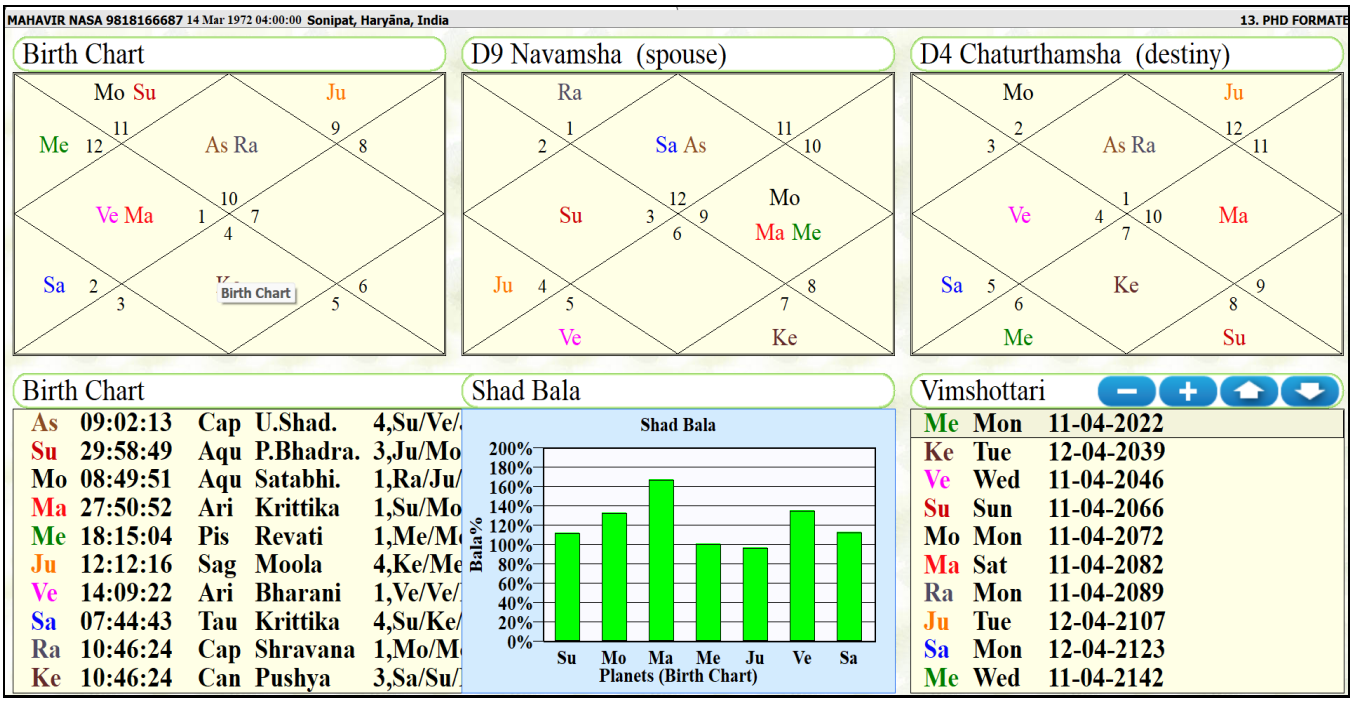

श्री महावीर नासा

जन्म तिथि :14 मार्च 1972
जन्म समय प्रातः :04:00 बजे
जन्म स्थानसोनीपत :, हरियाणा

D-1 (लग्न कुंडलीविश्लेषण (

लग्न) कुम्भ :Aquarius)
लग्नेशद्वितीय भाव में स्थित – शनि :
चतुर्थेश)4th Lord): शुक्र द्वितीय भाव में मंगल के साथ –

सकारात्मक योग

1. **नियम-8:** चतुर्थ भाव एवं द्वितीय भाव का संबंध
   चतुर्थेश शुक्र द्वितीय भाव में स्थित है। यह परिवार से संपत्ति प्राप्ति का योग बनाता है।
2. **नियम-5:** मंगल के साथ चतुर्थेश का संयोग
   मंगल के साथ होता है (चतुर्थेश) जब शुक्र (भूमि का कारक), तब स्वयं के प्रयासों से संपत्ति प्राप्ति का मजबूत योग बनता है।
   मंगल दशम भाव का स्वामी होने से निर्माण और कर्मक्षेत्र में लाभ (वृश्चिक) देता है।
3. **नियम-6:** शनि और पैतृक संपत्ति
   शनि लग्नेश होकर द्वितीय भाव में स्थित है। यह पैतृक संपत्ति (परिवार भाव) प्राप्ति का योग बनाता है।
4. **नियम-14:** द्वितीय भाव में शुभ ग्रहों का संयोग
   शुक्र)4th lord) और शनि)Lagna lord) का द्वितीय भाव में संयोग परिवारिक संपत्ति और आर्थिक स्थायित्व को दर्शाता है।
5. **नियम-15:** स्थिर लग्न और बलवान चतुर्थेश
   कुम्भ लग्न स्थिर राशि है।
   शुक्र मंगल के साथ स्थित होकर मजबूत संपत्ति योग बनाता है। (चतुर्थेश)

D-9 (नवांश कुंडलीविश्लेषण (

लग्नधनु :
लग्नेशषष्ठ भाव में स्थित – बृहस्पति :
यह गृह सुख में कुछ कमी या विलंब दर्शाता है।
D-9 में चतुर्थेश भी बृहस्पति है जो षष्ठ भाव में होने से गृहसुख के मामलों में मध्यम परिणाम देता है।

D-4 (चतुर्थांश कुंडलीसंपत्ति के लिए विशेष – विश्लेषण (

लग्नधनु :
लग्नेशचतुर्थ भाव में स्थित – बृहस्पति :
नियम 1 और 4 के अनुसार, यदि चतुर्थेश चतुर्थ भाव में हो तो स्थायी संपत्ति का योग अत्यंत प्रबल होता है।
मंगल षष्ठ भाव में है भूमि संबंधी कार्यों में संघर्ष और परिश्रम का योग। –
शुक्र द्वितीय भाव में स्थित है संपत्ति और धन प्राप्ति को पुष्ट करता है। –

तालिका :6 षड्बल)Shadbala) विश्लेषण

ग्रह	बल	टिप्पणी
चन्द्र	1.33	अच्छा
मंगल	1.00	औसत
बुध	0.96	कमजोर
बृहस्पति	1.35	बहुत मजबूत
शुक्र	1.13	मजबूत
शनि	1.13	मजबूत

शुक्र दोनों बलवान हैं जो स्थायी संपत्ति और आर्थिक (लग्नेश) और शनि (चतुर्थेश) स्थिरता के सूचक हैं।

नियमआधारित सारांश-

नियम नं .| विवरण	स्थिति	परिणाम
#1	बलवान चतुर्थेश केंद्र में	D4 में बृहस्पति 4th में	उत्कृष्ट
#5	मंगल चतुर्थेश से युति	मंगल शुक्र युति-| अच्छा
#6	शनि का चतुर्थ भाव से संबंध	शनि 2nd में 4th lord के साथ	बहुत अच्छा
#8	चतुर्थ-11 या 2nd संबंध	शुक्र 2nd में	उत्कृष्ट
#14	2nd में शुभ ग्रह	शुक्र व शनि 2nd में	अच्छा
#15	स्थिर लग्न व बलवान 4th lord	कुम्भ लग्न व शुक्र बलवान	अच्छा
#9	स्थिर राशि या चन्द्र 4th में	D4 में बृहस्पति 4th में	आंशिक रूप से अच्छा

निष्कर्ष

1. श्री महावीर नासा की कुंडली में भूमि, भवन और संपत्ति के अत्यंत प्रबल योग हैं।
2. पैतृक संपत्ति के साथसाथ स्वयं के प्रयासों से भी संपत्ति निर्माण के योग प्रबल - हैं।
3. D-4 चतुर्थांश कुंडली में चतुर्थेश बृहस्पति का 4th भाव में स्थित होना वास्तविक संपत्ति और स्थायित्व का मुख्य संकेत है।
4. शुक्रमंगल युति भूमि-, वाहन और निर्माण कार्यों से लाभ देती है।
5. मंगल महादशा)2039–2046) में कुछ संघर्ष या विलंब संभव है क्योंकि मंगल D-4 में षष्ठ भाव में है, परंतु कुल मिलाकर यह योग समृद्धि और स्थायी संपत्ति के संकेत देता है।

प्रकरण अध्ययन)Case Study – 5)

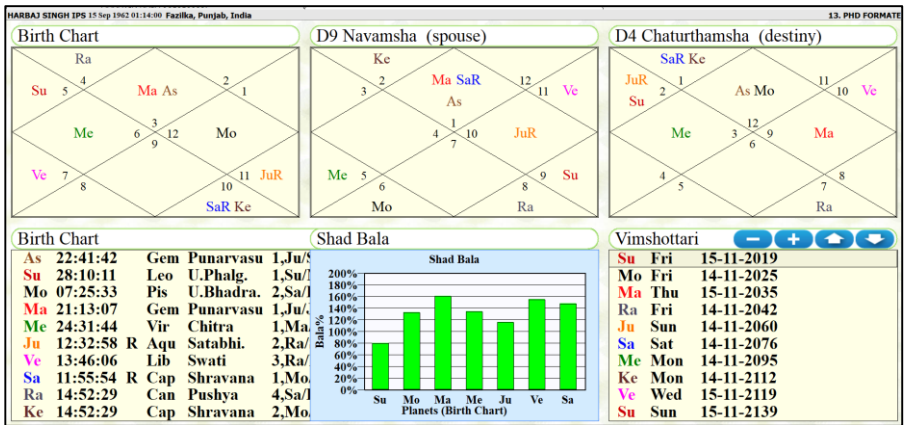

श्री हरभज सिंह
जन्म तिथि: 15 सितम्बर 1962
जन्म समय: प्रातः 01:14 बजे
जन्म स्थान: फाज़िल्का (पंजाब)
लग्न: मिथुन)Gemini)

D-1 (लग्न कुंडली (विश्लेषण
1. चतुर्थ भाव संपत्ति), गृह सुख, भूमि:(
कन्या राशि में चतुर्थेश बुध स्वयं चतुर्थ भाव में स्थित है।

- चतुर्थेश का स्वगृही होकर केंद्र)4th house) में होना बहुत शुभ है।
- यह योग स्वयं की मेहनत से भूमि, मकान या संपत्ति अर्जित करने की पूर्ण क्षमता देता है।
- (नियम 1 एवं 2 पूर्णतः संतुष्ट।(

2. मंगल :(भूमि का कारक)
द्वितीय भाव में नीच राशि में स्थित है। (कर्क)

- परिवार एवं धन भाव से संबंध होने पर भी नीचत्व के कारण संघर्ष या विवाद से संपत्ति प्राप्ति के योग।
- (नियम 5 आंशिक रूप से संतुष्ट।(

3. शनि:
अष्टम भाव में वक्री अवस्था में स्थित है। (मकर)

- द्वितीय भाव पर दृष्टि डालता है, जो परिवारिक संपत्ति का योग देता है परंतु देर से या विवादों के बाद।
- (नियम 6 आंशिक रूप से संतुष्ट।(

4. द्वितीय भाव :(धन/परिवार)
कर्क राशि में नीच मंगल के कारण परिवारिक धन से जुड़ी कुछ कठिनाइयाँ या संघर्ष के योग।

5. लग्नेश बुध:
स्वयं अपने घर)4th house) में स्थित होकर कुंडली को बल देता है।
यह दर्शाता है कि संपत्ति अधिकतर स्वयं के प्रयासों से प्राप्त होगी।

D-9 (नवांश कुंडलीविश्लेषण (

- लग्नकन्या :, लग्नेश बुध दशम भाव में स्थित। (मिथुन)
  ⟶ स्वयं के प्रयत्नों से सफलता के योग।
- चतुर्थ भावधनु राशि :, जिस पर लग्नस्थ मंगलशनि की दृष्टि।-
  ⟶ भूमि एवं भवन की प्राप्ति में परिश्रम और देरी के संकेत।
- शुक्र सप्तम में उच्च राशि में स्थित। (मीन)
  ⟶ अंततः सुखसुविधाओं और संपत्ति में वृद्धि का योग।-
  (नियम 3 और 9 आंशिक समर्थन।(

D-4 (चतुर्थांश कुंडली (संपत्ति हेतु विशेष –

- लग्नधनु :, लग्नेश बृहस्पति द्वितीय भाव मकर), वक्रीमें सूर्य के साथ। (
  ⟶ परिवार एवं संपत्ति में सीधा संबंध।
  (नियम 14 संतुष्ट।(
- शनि और केतु भी द्वितीय भाव में –
  ⟶ पैतृक संपत्ति के योग, परंतु विवाद या देरी के साथ।
- मंगल षष्ठ भाव में –
  ⟶ भूमि या संपत्ति विवाद या कोर्ट केस की संभावनाएँ।
- शुक्र एकादश भाव में –
  ⟶ संपत्ति से अंततः लाभ और सुख की प्राप्ति।

नियमआधारित सारांश-

तालिका7 : नियमआधारित सारांश-

नियम संख्या	विवरण	परिणाम	टिप्पणी
1 और 2	बलवान चतुर्थेश शुभ ग्रह /	संतुष्ट	बुध स्वगृही चतुर्थ भाव में
3	चंद्र शुक्र का चतुर्थ पर/प्रभाव	आंशिक	D-9, D-4 में समर्थन
5	मंगल बलवान या चंद्र से संबंध	आंशिक	मंगल नीच
6	शनि का चतुर्थ भाव से संबंध	आंशिक	वक्री शनि, देरी से परिणाम
8	चतुर्थ और 11वें भाव का संबंध	संतुष्ट	D-4 में शुक्र एकादश में
9	चंद्र चतुर्थ में या स्थिर राशि	आंशिक	D-4 में चंद्र लग्न में
14	2nd/4th भाव संबंध	संतुष्ट	D-4 में बृहस्पति द्वितीय में
15	स्थिर लग्न व बलवान चतुर्थेश	संतुष्ट	मिथुन चल राशि, पर बुध बलवान

निष्कर्ष

1. D-1 में बुध का स्वगृही होकर चतुर्थ भाव में स्थित होना अत्यंत शुभ योग है, जो स्वयं की मेहनत से भूमिसंपत्ति प्राप्ति दर्शाता है।-
2. D-9 में संपत्ति के लिए परिश्रम और देरी के संकेत हैं, परंतु अंततः सुख मिलता है।
3. D-4 चतुर्थांश में पैतृक संपत्ति के योग हैं, परंतु शनिकेतु के कारण विवाद या - कोर्ट केस के संकेत।
4. शुक्र का एकादश भाव में होना अंततः लाभ और स्थायी सुख देता है।
5. कुल मिलाकर, कुंडली में स्वयं अर्जित एवं पैतृक दोनों प्रकार की संपत्ति के योग प्रबल हैं।

परंतु विवाद, विलंब और परिश्रम के बाद स्थायी संपत्ति प्राप्त होगी।

संपूर्ण विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है की पैतृक भूमि संपत्ति प्राप्ति के लिए ज्योतिष शास्त्र में स्पष्ट और सटीक योग दिए गए हैं। साथ ही ज्योतिष के सामान्य सिद्धांतों के आधार पर मूल्यांकन करने पर ज्योतिष का वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी स्पष्ट हो जाता है। मैंने अपने विवेक से पैतृक संपत्ति के लिए ज्योतिष शास्त्रीय दृष्टिकोण के आधार पर व्याख्या करने का पूर्ण प्रयास किया है। यदि विद्वान जन आगे कुछ समाहित करना चाहें तो स्वागत है।

संदर्भ सूची

1. Parāśara M. *Bṛhat Parāśara Horā Śāstra*. Sharma GC, translator. Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Pratishthan; 2010.
2. Mantreśvara. *Phaladīpikā*. Kapoor GS, translator. New Delhi: Ranjan Publications; 2007.

3. Vaidyanātha Dīkṣita. *Jātaka Pārijāta*. Varanasi: Chaukhamba Surbharati Prakashan; 2015.
4. Kalyāṇavarman. *Sārāvalī*. Varanasi: Chaukhamba Sanskrit Series; 2012.
5. Yavanācārya. *Jātaka Sāradīpa*. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers; 1992.
6. Raman BV. How to Judge a Horoscope. Vols. 1–2. Delhi: Motilal Banarsidass; 2007.
7. Krishnamurti KS. Astrology & Fate. Chennai: K.P. Stellar Publications; 2004.
8. Rath S. Crux of Vedic Astrology. New Delhi: Sagar Publications; 2003.
9. Vasudev GD. The Art of Prediction in Astrology. New Delhi: UBS Publishers; 2011.
10. Goel VP. Predicting through Jaimini's Chara Dasha. New Delhi: Sagar Publications; 2014.
11. Sharma RK. Astrological indicators of property and wealth. J Astrology Res. 2019;18.
12. Joshi A. Vedic parameters of inheritance in astrology. Indian J Jyotisha Stud. 2020;7(2).
13. Singh P. Role of 2nd, 4th, 8th & 9th houses in ancestral property. Res J Vedic Astrology. 2022;12.
14. Rao KN. Astrology, Destiny & the Wheel of Time. New Delhi: Sagar Publications; 2000.
15. Charak KS. Essentials of Medical Astrology & Predictive Astrology. Delhi: IJVS Publication; 1998.